चतुर्थ अध्याय

पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिंदी अध्ययन, अध्यापन और पाठ्यपुस्तकें।

चतुर्थ अध्याय

पूर्व माध्यमिक स्तर पर हिन्दी अध्ययन,अध्यापन और पाठ्यपुस्तकें -

मानिक उद्देश्यों के आधार पर पूर्व-माध्यमिक पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन सैद्धांतिक रूप में करने के पश्चात यह जानना आवश्यक है कि उन पुस्तकों का अध्ययन - अध्यापन प्रक्रिया में उपयोग करने वालों की राय क्या है ? अत: छात्र ,अध्यापक,शिक्षक-प्रशिक्षक एवं प्रशिक्षणार्थियों की इन पुस्तकों के संदर्भ में मानिक उद्देश्यों की दृष्टि से क्या राय है ,यह अजमाने के लिए उनमें से कुछ लोगों के नमूना रूप में साक्षात्कार लेकर,उससे प्राप्त सामग्री के आधार पर हम किसी निष्कर्ष तक पहुँच पायेंगे । इसलिए १८० छात्रों, २० अध्यापकों तथा २५ शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों से साक्षात्कार प्राप्त किये हैं, जो निम्नांकित सारणीबद्ध रूप में देने का प्रयास किया है । प्रस्तुत साक्षात्कार के लिए प्रयुक्त सभी प्रश्नावलियाँ परिशिष्ट में संलग्न हैं ।

ग) छात्र साक्षात्कार तालिका

(१८० छात्र)

प्र. क्र.			प्रतिशत
१	निरक्षर है।	१५	८ %
	चौथी कक्षा तक	२१	१२ %
	सातवीं कक्षा तक	२१	१२ %
	दसवीं कक्षा तक	३९	२२ %
	बारहवीं कक्षा तक	२९	१६ %
	स्नातक	३८	१७ %
	स्नातकोत्तर	१७	९ %
२	जी हाँ	१७८	९९ %
	नहीं	२	१ %
३	जी हाँ	१७९	९९ %
	नहीं	१	१ %
४	जी हाँ	१६२	९० %
	नहीं	१८	१० %
५	जी हाँ	१७९	९९ %
	नहीं	१	१ %
६	हिंदी	५५	३१ %
	मराठी	४	२ %
	हिंदी-मराठी	१२१	६७ %

प्र. क्र.			प्रतिशत			प्रतिशत
७	जी हाँ	१६२	९० %			
	नहीं	१८	१० %	शहरी	५	२८ %
				ग्राम्य	१३	७२ %
८	जी हाँ	७७	४३ %			
	नहीं	१०३	५७ %	शहरी	३३	३२ %
				ग्राम्य	७०	६८ %
९	जी हाँ	१०३	५७ %			
	नहीं	७७	४३ %	शहरी	२२	२९ %
				ग्राम्य	५५	७१ %
१०	जी हाँ	१२७	७१ %			
	नहीं	५३	२९ %			
११	जी हाँ	१५३	८५ %			
	नहीं	२७	१५ %			
१२	आसान	८९	४९ %			
	कठिन	९१	५१ %			
१३	जी हाँ	१२८	७१ %			
	नहीं	५२	२९ %	शहरी	२१	४० %
				ग्राम्य	३१	६० %

प्र. क्र.			प्रतिशत			प्रतिशत
१४	जी हाँ	१४९	८३ %			
	नहीं	३१	१७ %			
१५	जी हाँ	१८०	१०० %			
	नहीं	-	-			
१६	जी हाँ	९२	५१ %			
	नहीं	८८	४९ %	शहरी	३७	४२ %
				ग्राम्य	५१	५८ %
१७	जी हाँ	१७०	९४ %			
	नहीं	१०	६ %			
१८	जी हाँ	१५७	८७ %			
	नहीं	२३	१३ %			
१९	जी हाँ	१६५	९२ %			
	नहीं	१५	८ %	शहरी	६	४० %
				ग्राम्य	९	६० %
२०	मराठी मे अर्थ बताकर	८७	४८ %			
	हिंदी मे अर्थ बताकर	१४	८ %			
	विविध उदाहरणों के आधार पर	५६	३१ %			
	संदिग्ध	२३	१३ %			
२१	जी हाँ	१२०	६७ %			
	नहीं	६०	३३ %	शहरी	२८	४७ %
				ग्राम्य	३२	५३ %

आ) अध्यापक - साक्षात्कार सारणा

(२० छात्र)

प्र क्र			प्रतिशत
१	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	-	-
२	आशय को महत्व देकर	१०	५० %
	परीक्षा को महत्व देकर	-	-
	भाषा को महत्व देकर	६	३० %
	संदिग्ध	४	२० %
३	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	-	-
४	५ वीं	०	-
	६ वीं	१	५ %
	७ वीं	५	२५ %
	संदिग्ध	१४	७० %
५	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	००	-
६	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	००	-
७	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	-	-

प्र. क्र			प्रतिशत
८	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	-	-
९	हिंदी व्याकरण का पुस्तक	२	१० %
	पाठ्यपुस्तक	४	२० %
	हस्त पुस्तीका	१	५ %
	केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक हिंदी पुस्तीका	३	१५ %
	संदिग्ध	१०	५० %
१०	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	-	-
११	जी हाँ	१८	९० %
	नहीं	२	१० %
१२	जी हाँ	१८	९० %
	नहीं	२	१० %
१३	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	-	-
१४	जी हाँ	१६	८० %
	नहीं	४	२० %

प्र. क्र.			प्रतिशत
१५	जी हाँ	७	३५ %
	नहीं	१३	६५ %
१६	पुरानी	४	२० %
	नयी	१६	८० %
१७	जी हाँ	१०	१०० %
	नहीं	-	-
१८	जी हाँ	२०	१०० %
	नहीं	-	-
१९	जी हाँ	१७	८५ %
	नहीं	३	१५ %
२०	अर्थ बतलाकर	१	५ %
	उदाहरण देकर	३	१५ %
	चित्र के आधार पर	०	-
	विश्लेषण के आधार पर	२	१० %
	स्पष्टीकरण के आधार पर	०	-
	संदिग्ध	१४	७० %
२१	जी हाँ	१२	६०-%
	नहीं	८	४० %

प्र. क्र.			प्रतिशत
२२	जी हाँ	७	३५ %
	नहीं	१३	६५ %
२३	जी हाँ	१७	८५ %
	नहीं	३	१५ %
२४	श्रवण	१	५ %
	वाचन	२	१० %
	भाषण	१	५ %
	लेखन	०	-
	संदिग्ध	१६	८० %
२५	जी हाँ	१७	८५ %
	नहीं	३	१५ %
२६	जी हाँ	१९	९५ %
	नहीं	१	५ %
२७	जी हाँ	१८	९० %
	नहीं	२	१० %

इ) शिक्षक-प्रशिक्षक साक्षात्कार सारणी

(२७ शिक्षक-प्रशिक्षक)

प्र क्र			प्रतिशत
१	२०	१९	७६ %
	१०	६	२४ %
२	१०	२१	८४ %
	११	४	१६ %
३	१०	११	४४ %
	११	१४	५६ %
४	जी हाँ	६	२४ %
	नहीं	१९	७६ %
५	गद्य	१६	६४ %
	पद्य	७	२८ %
	रचना	-	-
	व्याकरण	२	८ %
६	मराठी	२	८ %
	हिंदी	२३	९२ %

प्र. क्र			प्रतिशत
७	५ वीं	३	१२ %
	६ वीं	५	२० %
	७ वीं	४	१६ %
	८ वीं	५	२० %
	९ वीं	६	२४ %
	१० वीं	२	८ %
८	जी हाँ	१३	५२ %
	नहीं	१२	४८ %
९	सुझाव	१२	४८ %
		२३	५२ %
१०	प्रश्न पद्धति	६	२४ %
	उद्गामी पद्धति	६	२४ %
	संभाषण व प्रश्न पद्धति	४	१६ %
	भाषा प्रश्नोत्तर व्याकरण प्रणाली	३	१२ %
	व्याकरण अनुवाद प्रणाली	६	२४ %

प्र. क्र.			प्रतिशत
११	गद्य	१२	४८ %
	पद्य	१०	४० %
	रचना	१	४ %
	व्याकरण	१	४ %
	संदिग्ध	१	४ %
१२	जी हाँ	४	१६ %
	नहीं	२१	८४ %
१३	जी हाँ	२४	९६ %
	नहीं	१	४ %
१४	जी हाँ	२४	९६ %
	नहीं	१	४ %
१५	हिंदी व्याकरण की पुस्तीका	१४	५६ %
	पाठ्यपुस्तक	३	१२ %
	हस्तपुस्तीका	-	-
	केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक पुस्तीका	८	३२ %
१६	जी हाँ	२३	९२ %
	नहीं	२	८ %
१७	जी हाँ	०	-
	नहीं	२५	१०० %

(ई) निष्कर्ष --

पूर्व माध्यमिक स्तर पर छात्र माध्यिक-कौशलों से अवगत होते हैं या नहीं यह देखने के लिए, १८० छात्र, २० अध्यापक और २५ शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों के साक्षात्कार से निम्न जानकारी प्राप्त होती है।

अध्यापक साक्षात्कार से स्पष्ट होता है कि ७ वीं कक्षा उत्तीर्ण ८५% छात्र माध्यिक कौशलों से अवगत होते हैं। श्रवण, वाचन, भाषण और लेखन इन चार कौशलों में से छात्र ५% श्रवण १०% वाचन ५% भाषण और ८०% इन में से दो कौशलों से अवगत होते हैं। ८५% अध्यापकों के मतानुसार ७ वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र अपने विचारों को हिन्दी में अभिव्यक्त कर सकते हैं। ९५% ७वीं उत्तीर्ण छात्र अपने विचारों को हिन्दी में लिख सकते हैं। पर छात्र साक्षात्कार से स्पष्ट होता है कि ४३% छात्र आसानी से हिन्दी बोल सकते हैं। ५७% छात्र मानक हिन्दी में लिख सकते हैं। ५२% शिक्षक - प्रशिक्षणार्थियों के मतानुसार हिन्दी भाषा सीखने के लिए ५ वीं, ६वीं, ७वीं कक्षा की हिन्दी पाठ्यपुस्तकें पर्याप्त लगती है। ४८% अध्यापकों के मतानुसार भाषा सीखने के लिए गद्य और पद्य पर अधिक बल देना चाहिए और व्याकरण की स्वतंत्र किताब होनी चाहिए। छात्रों को मानक पुस्तीका पढानी चाहिए। पाठ्यपुस्तक में पुरक वाचन होना चाहिए और भाषा सीखने के लिए ८वीं से १२ वीं तक के किताबों का अध्ययन आवश्यक है।

अत: स्पष्ट है कि पाठ्यपुस्तक में त्रुटियाँ न होते हुए भी, ५वीं से ७वीं तक अध्ययन करने के बाद छात्र सभी माध्यिक कौशलों से अवगत नहीं होता। इस का अर्थ यही है कि अध्यापक, साक्षात्कार के समय प्रश्नों का स्वरूप समझाने के बावजूद भी अपने आदर्श को स्थापित करने के लिए उचित जानकारी पेश नहीं करता है। और अध्यापन करते समय माध्यिक कौशलों पर अधिक बल नहीं देते हैं। अध्यापक मानक हिन्दी के लिए केंद्रिय हिन्दी निदेशालय द्वारा निर्धारित

मानक हिन्दी पुस्तीका का उपयोग नहीं करते हैं,इस कारण छात्रों में भाषण, लेखन कौशलों का विकास नहीं होता । इन सभी कारणों के परिणाम स्वरूप ७वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र सभी भाषिक कौशलों से अवगत नहीं होता ।

अध्यापकों ने अध्यापन करते समय परीक्षा यही एक मात्र हेतु सामने न रखकर अध्यापन करना चाहिए । आज कल अध्यापक उपलब्ध तासिका में पाठ्यक्रम पूरा करने की कोशिश में रहते हैं । लेकिन भाषिक कौशलों की पूर्ति हेतु अध्यापन नहीं होता है । छात्रों को पाठशाला में बोलने का मौका अधिक नहीं मिलता है । स्वयं अध्यापकों को मानक उच्चाला,लेखन संबंधि अधिक जानकारी न होने के कारण छात्रों के मानक उच्चारण की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है । साथ ही मानक लेखन की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है । नतीजा यह सामने आता है कि ७वीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र अपने विचार हिन्दी में न अभिव्यक्त कर सकता है, न लिख पाता है । और वह न भाषिक कौशलों से अवगत होता है ।